उत्तर काशी

24 फरवरी. 2018

प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी के नाम खुला पत्र

प्रिय छोटे भाई नरेन्द्र मोदी,

माता-पिता-पूर्वजों के प्रति कर्त्तव्य पालन का यश प्राप्त करो

भाई, प्रधान मंत्री तो तुम बाद में बने,माँ गंगा जी के बेटों मे तो मैं तुम से 18 वर्ष बडा हूँ । 2014 के लोक-सभा चुनाव तक तो तुम भी स्वयं माँ गंगाजी के समझदार, लाडले और माँ के प्रति समर्पित बेटा होने की बात करते थे - पर वह चुनाव माँ के आशीर्वाद और प्रभु राम की कृपा से जीतकर अब तो तुम माँ के कुछ लालची, विलासिता-प्रिय बेटे-बेटियों के समूह में फँस गये हो और उन नालायकों की विलासिता के साधन (जैसे अधिक बिजली) जुटाने के लिये, जिसे तुम लोग विकास कहते हो, कभी जल मार्ग के नाम से बूढी माँ को बोझा ढोने वाला खच्चर बना डालना चाहते हो, कभी ऊर्जा की आवश्यकता पूरी करने के लिये हल का, गाडी का या कोल्हू जैसी मशीनों का बैल। माँ के शरीर का ढेर सारा रक्त तो ढेर सारे भूखे बेटे-बेटियों की फौज को पालने मे ही चला जा रहा है जिन नालायकों की भूख ही नही मिटती. और जिन्हें माँ के गिरते स्वात्थ्य का जरा भी ध्यान नहीं। माँ के रक्त के बल पर ही सूरमा बने तुम्हारी चाण्डाल चौकडी के कई सदस्यों की नज़र तो हर समय जैसे माँ के बचे खुचे रक्त को चूस लेने पर ही लगी रहती है, माँ जीवित रहे या भले ही मर जाये। तुम्हारे संविधान द्वारा घोषित इन बालिगों को तो जैसे माँ को माँ नहीं, अपनी सम्पत्ति मानने का अधिकार मिल गया है। समझदार बच्चे तो नाबालिग या छोटे रहने पर भी मातृ-ऋण उतारने की, माँ को स्वस्थ-सुखी रखने की ही सोचते हैं और अपने नासमझ भाई-बहनों को समझाते भी हैं । वे कुछ नासमझ, नालायक, स्वार्थी भाई-बहनों के स्वार्थ परक हित-साधन के लिये माँ पर बोझा-लादने, उसे हल, कोल्हू या मशीनों में जोतने की तो सोच भी नही सकते खून चूसने की तो बात ही दूर है।

तुम्हारा अग्रज होने, तुम से विद्या-बुद्धि में भी बडा होने और सबसे ऊपर माँ गंगा जी के स्वास्थ्य-सुख-प्रसन्नता के लिये सब कुछ दाँव पर लगा देने के लिये तैयार होने मे तुम से आगे होने के कारण गंगा जी से सम्बन्धित विषयों में तुम्हें समझाने का, तुम्हें निर्देश तक देने का जो मेरा हक बनता है वह माँ की ढेर सारी मनौतियों और कुछ अपने भाग्य और साथ में लोक-लुभावनी चालाकियों के बल पर तुम्हारे सिंहासनारूढ हो जाने से कम नही हो जाता। उसी हक से मैं तुम से अपनी निम्न अपेक्षायें सामने रख रहा हूँ -

अपेक्षा (क): त्रिपथा माँ गंगाजी की अलकनन्दा बाहु को छेदन करने वाली विष्णुगाड़ पीपलकोटी परियोजना तथा मन्दाकिनी बाहु को छेदन करने वाली फाटा-ब्यूंग, सिगोली-भटवारी परियोजनाओं पर सभी निर्माण कार्य तुरन्त बन्द कराओ और वे तब तक पूर्णयता बन्द रहें जब तक,

(अ) अपेक्षा (ख) के अन्तर्गत उन पर संसद मे विस्तृत चर्चा के बाद मत-विभाजन द्वारा माँ गंगा जी के हितों की दृष्टि से आवश्यक निर्णय न हो (और)
(आ) अपेक्षा (ग) मे बताई गई परिषद की भी सहमति न हो ।

अपेक्षा (ख): तुम्हारी सरकार द्वारा माँ गंगाजी के संरक्षण तथा उनके स्वात्थ्य में सुधार के हित मे प्रबन्धन के उद्देश्य से लगभग दो वर्ष पूर्व गठित की गई न्यायमूर्ती गिरिधर मालवीय समिति के द्वारा प्रस्तावित गंगाजी संरक्षण विधेयक को अविलम्ब संसद मे विचार कर उसे पारित करने की बजाय, उसे ठण्डे बस्ते मे डाल देने के अपराधी यदि तुम नही तुम्हारा कोई नालायक सहयोगी या अधिकारी है, तो उसे तुरन्त बरखास्त करो और स्वयं पश्चात्ताप स्वरूप शीघ्रातिशीघ्र उसे पारित तथा लागू कराओ। विक्रम सं. 2075 में गंगा संरक्षण विधेयक के कानून बन कर लागू होने तक संसद अन्य कोई भी कार्य न करे -- श्रद्धांजली या शोक प्रस्ताव या प्रश्न काल भी नही -- माँ गंगाजी के संरक्षण से ऊपर अब कुछ ना हो।

अपेक्षा (ग): राष्ट्र में एक गंगा-भक्त परिषद गठित हो जिस मे सरकारी और गैर-सरकारी दोनों प्रकार के व्यक्ति सम्मिलित हो सकें पर प्रत्येक सदस्य प्रवेश पर यह शपथ ले कि वह कुछ भी सोचते, कहते, करते समय गंगाजी के हितो का ध्यान रखेगा और उसका कोई भी बयान, सुझाव, प्रस्ताव, सहमति या कार्य ऐसा नही होगा. जिससे माँ गंगा जी का रत्ती भर भी अहित होने की रत्ती भर भी संभावना Aहो। गंगा जी के विषय मे किसी भी निर्माण या विकास कार्य को करने के लिये गंगा-संरक्षण-विधेयक (कानून) के अन्तर्गत स्वीकार्य होने के साथ-साथ इस गंगा-भक्त परिषद की सहमति भी आवश्यक हो।

पिछले साढे तीन से अधिक वर्ष तुम्हारी और तुम्हारी सरकार की प्राथमिकतायें और कार्यपद्धति देखते हुए मेरी अपेक्षाये मेरे जीवन में पूरा होने की संभावना नगण्य ही है और माँ गंगाजी के हितो की इस प्रकार उपेक्षा से होने वाली असहय यातना से मेरा जीवन ही यातना बनकर रह गया है -- अतः मैं ने निर्णय किया है गंगा दशहरा (22 जून 2018 सा.श.) तक उपरोक्त तीनों अपेक्षायें पूर्ण न होने की स्थिति में मैं आमरण उपवास करता हुआ और माँ गंगाजी को पृथ्वी पर लाने वाले महाराजा भगीरथ के वंशज शक्तिमान प्रभु राम से माँ गंगा के प्रति अहित करने और अपने एक गंगा भक्त बडे भाई की हत्या करने के अपराध का तुम्हें समुचित दण्ड देने की प्रार्थना करता हुआ प्राणत्याग दूँ ।

तुम्हारा माँ गंगा भक्त बडा भाई,
स्वामी ज्ञान स्वरूप सानन्द
(संन्यास-पूर्व - डा. गुरुदास अग्रवाल, पूर्व प्रोफेसर, आई.आई.टी. कानपुर एवं
सदस्य-सचिव CPCB नई दिल्ली